The Academia
(A Multidisciplinary Peer-Reviewed Research Journal)
Volume: 02, Issue: II, Pages: 16-20, Year: 2024

ISSN- 2583-8830

नये भारत में महात्मा गांधी

डॉ. रामानुज यादव [1]

1. हिंदी विभाग, सी.एम.पी.डिग्री कॉलेज इलाहाबाद, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

शोध सारांश

भारत जैसे बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक देश के निवासियों में स्वराज और स्वशासन जैसे विचार लोकतान्त्रिक विकेंद्रीकरण के गांधी के विचार नये भारत के लिए किस तरह से उपयोगी हैं | गांधीवादी विचार ने देश की राजनीतिक दिशा और दशा को किस हद तक प्रेरित और प्रभावित किया है इसका एक विवरण इस लेख में देखने को मिलेगा | साथ ही साथ सर्वधर्म समभाव, सबका साथ सबका विकास जैसे मूल्य तथा इनके पीछे गांधी जी के कौन से विचार काम कर रहे थे उन्हें देखा गया था | नये भारत के निर्माण में हिन्दू-मुस्लिम एकता, स्वशासन , ग्राम स्वराज का प्रसार, प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा और परंपरागत चिकित्सीय ज्ञान के उपयोग जैसे गांधीवादी विचार कैसे उपयोगी हैं इन्हें देखने का प्रयास इस लेख में किया जाएगा |

बीज शब्द . नया भारत, अहिंसा, समावेशी भारत, सामाजिक न्याय, सार्वभौमिक भाईचारा, ग्राम स्वराज, स्वशासन, 'सर्वधर्म समभाव

1. प्रस्तावना

नया भारत जिसका अर्थ एक समृद्ध विकसित समावेशी भारत से है जो कि भारत के प्राचीन गौरवशाली इतिहास और संस्कृति से जुड़ा हुआ हो और भविष्य को आशा और विश्वास से देखता हो। ऐसा माना जाता है कि आर्थिक वृद्धि के साथ सामाजिक न्याय का होना सामाजिक सौहार्द के लिए आवश्यक है अन्यथा वह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये स्वयं एक चुनौती बन सकता है । ऐसे में महात्मा गांधी के विचार जैसे अहिंसा, सच बोलना, सामाजिक न्याय, सार्वभौमिक भाईचारा, ग्राम स्वराज, स्वशासन इन सब मूल्यों का इस समृद्ध विकसित और समावेशी भारत में क्या प्रासंगिकता रहेगी। जैसे नए भारत में जब आर्थिक समृद्धि बहुत ज्यादा हो जाएगी तो लोगों के बीच में भाईचारा, सामाजिक सौहार्द, सामाजिक न्याय जैसे मुद्दे को प्रासंगिक रखने में गांधी जी के विचार बेहद जरूरी पाठ के रूप में हमारे सामने आयेंगी ।आज विश्व गांधी के नैतिक आत्मबल, अहिंसा, सदाचार जैसे सिद्धांत कल्चरल हेजेमनी के रूप में अन्य देशों के लिए वैचारिक रास्ता दिखाने का काम करते हैं ।

सामान्य रूप से देखे तो गांधीवादी विचारधारा महात्मा गांधी द्वारा अपनाई और विकसित की गई उन धार्मिक-सामाजिक विचारों का समूह है जो उन्होंने पहली बार वर्ष 1983 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में तथा उसके बाद फिर भारत में अपनाई और विकसित की गई थी। गांधीवादी दर्शन प्राचीन भारतीय संस्कृति में निहित है तथा सार्वभौमिक नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों का पालन करता है। गांधीजी ने इन विचारधाराओं को विभिन्न प्रेरणादायक स्रोतों जैसे- भगवतगीता, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, बाइबिल, गोपाल कृष्ण गोखले, टॉलस्टॉय, जॉन रस्किन आदि से विकसित किया। टॉलस्टॉय की पुस्तक 'द किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू' का महात्मा गांधी पर गहरा प्रभाव था। गांधीजी ने रस्किन की पुस्तक 'अंटू दिस लास्ट' से 'सर्वोदय' के सिद्धांत को ग्रहण किया और उसे जीवन में उतारा। गांधीजी ने आजादी की लड़ाई के साथ-साथ छुआछूत उन्मूलन, हिन्दू-मुस्लिम एकता, चरखा और खादी को बढ़ावा, ग्राम स्वराज का प्रसार, प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा और परंपरागत चिकित्सीय ज्ञान के उपयोग सहित तमाम दूसरे उद्देश्यों पर कार्य करना निरंतर जारी रखा। आज के नये भारत में इन सभी सिद्धांतों की क्या उपयोगिता है इसे देखा जाना चाहिए|

हम जानते हैं कि भारत जैसे बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक देश के निवासियों में स्वराज और स्वशासन जैसे विचार लोकतान्त्रिक विकेंद्रीकरण के गांधी के विचार के अनुरूप हैं इसलिए कह सकते हैं कि न्यू इंडिया के निर्माण में महात्मा गांधी की भूमिका और उनका प्रभाव निर्विवाद है। वर्तमान इक्कीसवीं सदी में भी एक व्यक्ति और एक दार्शनिक के रूप में गांधीजी उतने ही प्रासंगिक है जितने कि वह पहले थे। जैसे गांधीजी द्वारा स्वीकृत 'सर्वधर्म समभाव' अर्थात् सभी धर्म समान है तथा 'सर्वधर्म सदभाव' अर्थात् सभी धर्मों के प्रति सद्भावना, इस वैश्विक एवं तकनीकी युग में सद्भाव और करुणा का वातावरण बनाए रखने और 'वसुधैव कुटुम्बकम' (विश्व एक परिवार है) के विचार को साकार करने के लिये आवश्यक है।

आज का दौर में सोशल मीडिया से आम लोग गलत सूचनाओं एवं अतिवाद से पीड़ित हैं । जगह जगह सूचनाओं के गलत प्रसार के कारण दंगे और लूटपाट जैसी घटनाएं हो जाती हैं | ऐसी स्थिति में, यह आवश्यक है कि हम सर्वधर्म समभाव और सर्वधर्म

The Academia
(A Multidisciplinary Peer-Reviewed Research Journal)
Volume: 02, Issue: II, Pages: 16-20, Year: 2024
ISSN- 2583-8830

सदभाव का पालन करें एवं चरमपंथ के प्रतिकार के लिये करुणा का सिद्धांत अपना सकते हैं । जैसे जब गाँधी जी यह कहते हैं कि "मैं तुम्हें एक जंतर देता हूं । जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम तुम पर हावी होने लगे तो यह कसौटी अपनाओ, जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने हृदय से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिये कितना उपयोगी होगा, क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त.. तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम समाप्त होता जा रहा है..."[1]| आज के समय में यह गाँधी जी कि सबसे बड़ी प्रासंगिकता है |

स्कॉटिश इतिहासकार थॉमस कार्लाइल ने उन्नीसवीं शताब्दी में अर्थशास्त्र के लिये एक दूसरा शब्द 'निराशाजनक विज्ञान'[2] का प्रयोग किया था। यह टी. आर. माल्थस की भविष्यवाणी से प्रेरित था कि आबादी, हमेशा खाद्य उत्पादन की तुलना में अधिक तेज़ी से बढ़ेगी, जो मानव जाति को गरीबी और कठिनाइयों की तरफ ले जाएगी। इसे अर्थशास्त्र की केंद्रीय समस्या 'असीमित आवश्यकताओं और सीमित संसाधनों के बीच असंतुलन'[3]के रूप में भी जाना जाता है। हालाँकि भारत में हमेशा ही असीमित उपभोग के बजाय तर्कसंगत उपभोग की परंपरा रही है। इसके अगर तह में जाए तो हमें अपनी सांस्कृतिक परंपरा के साथ नये भारत में गाँधी जी के विचारों के साथ जोड़ कर देख सकते हैं जब वह कहते हैं कि "हमारी आवश्यकता की पूर्ति के लिए इस पृथ्वी पर पर्याप्त संसाधन हैं मगर हमारे लालच के लिए नहीं हैं।"[4]

गांधीजी ने हमारे पारिस्थितिकीय तंत्रों को संरक्षित करने, जैविक और पर्यावरण हितैषी वस्तुओं का उपयोग करने तथा पर्यावरण पर किसी भी तरह का दबाव न पैदा करने के लिये संतुलित उपभोग पर बहुत ज़ोर दिया। इसके लिये उन्होंने अपनी खुद की उपभोग आवश्यकताओं को भी कम कर दिया था। दुर्भाग्य से, आज हम एक ऐसे चरण में पहुँच गए हैं जहाँ हम प्रकृति पर बोझ बन गए हैं और वसुधैव कुटुम्बकम के आदर्श की प्राप्ति असंभव हो चुकी है। इसलिये हमें भी गांधीजी का अनुकरण करते हुए अपनी ज़रूरतों को तर्कसंगत बनाने के तरीकों पर चर्चा करनी चाहिये और गांधीजी के विचारों और दर्शन को अपनी आर्थिक नीति और दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने का प्रयास करना चाहिये। गांधीजी के इस विचार को विश्व बैंक और कई प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों ने प्रतिध्वनित किया है, जहाँ उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया है कि पिरामिड के आधार तक पहुँचना महत्त्वपूर्ण है। किसी देश के समृद्धि का आकलन उसकी जनसंख्या के अंतिम श्रेणी के जीवन स्तर को माप कर किया जा सकता है। यह 'अंत्योदय'[5]की वही अवधारणा है, जिसे दीन दयाल उपाध्याय ने अपनाया था, जिसके केंद्र में समाज के सबसे कमज़ोर वर्ग की देखभाल करने का विचार है। सीढ़ी के निचले पायदान पर स्थित व्यक्ति को ऊपर उठाया जाता है, तभी देश का विकास हो सकता है । आज के समय में भारत में निचले पायदान पर रह रहे व्यक्ति की बेहतरी के लिए कई सामाजिक योजनाये चलायी जा रही हैं | स्वास्थ्य बीमा योजना, फसल सुरक्षा योजना जैसे प्रावधान इसी तरह के प्रयासों के रूप में देखे जा सकते हैं |

भारतीय संविधान के भाग 4 में अनुच्छेद 36 से 51 तक राज्य के नीति निदेशक तत्व में गांधीवादी विचारों को प्रमुखता दी गयी है जोकि संवैधानिक रूप से भी हमारे जीवन का हिस्सा बन गया है | कोई भी सरकार हो वह गाँधीवादी विचारों को त्यागकर नहीं चल सकती चाहे भले ही आज आजादी के 77 वर्ष हो चुके हो | भारत में लगभग नब्बे प्रतिशत लोग अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत हैं और जनसंख्या का एक बड़ा भाग अभी भी गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहा है । एक और विभाजन हमें बसावट के रूप में देखने को मिलता है वह है शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के रूप में | ऑक्सफेम की रिपोर्ट यह कहती है कि भारत में आर्थिक असमानता बढ़ रही है यहाँ हमें यह ध्यानं रखना होगा कि गाँधी जी के नये भारत में इस तरह की असमानता के लिए कोई स्थान न हो |

विश्व स्तर पर अनेक संस्थानों ने भरत में हो रहे सुधारों को सराहा है मसलन कि संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) के हालिया अध्ययन के अनुसार, पिछले आठ वर्षों में भारत बीस करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर लाया गया है । यह सच में एक बड़ी उपलब्धि है । ऐसा लगता है कि हम नये भारत के लिए बन रहे सही रास्ते पर हैं और उम्मीद है कि हम गरीबी को समाप्त कर पाएंगे । इसके लिये हमें गांधीजी के दर्शन की गहराई में उतरना होगा । संसाधनों के समुचित उपयोग के साथ गांधी जी के विचार को आत्मसात करना | जैसे गाँधी जी ने पूँजीवाद को बुरा माना है | "भारत को मुट्ठी भर लोगों के हाथों में पूंजी के केंद्रीकरण की जरूरत नहीं है, बल्कि उसके इस प्रकार के वितरण की जरूरत है कि वह 1900 मील लंबे और 1500 मील चौड़े देश के साढ़े सात लाख गांवों को सहज प्राप्य हो सके | (यंग इण्डिया , 23-3-1921, पृ. 93)|"[6]

आगे इस लेख में हम उन बिन्दुओं के तहत बात करने की कोशिश करेंगे जिससे महात्मा गांधी के विचारों को नये भारत में कैसे देखा जा सकता है उन्हें समझने गुँनने और विकसित करने के उपायों को भी एक एक करके देखा जायेगा |

The Academia
(A Multidisciplinary Peer-Reviewed Research Journal)
Volume: 02, Issue: II, Pages: 16-20, Year: 2024
ISSN- 2583-8830

नये भारत में सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास आज के समय का सबसे महत्त्वपूर्ण और संवेदनशील बिंदु है | नये भारत और समावेशी भारत के लिए यह आवश्यक है कि हम यह सुनिश्चित करें कि विकास के लाभ अल्पसंख्यकों, दलितों, महिलाओं और आदिवासी समुदायों सहित समाज के सभी वर्गों को एक समान रूप से उपलब्ध हो और कोई भी इससे पीछे नहीं छूटना चाहिये । पहले यह काम योजना आयोग करता था लेकिन अभी के समय में नीति आयोग इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये प्रतिबद्ध है ।

इसी तरह से गांधीजी स्वच्छता को स्वतंत्रता से भी अधिक महत्त्वपूर्ण मानते थे। भारत में स्वच्छता एक बड़ा मुद्दा है जिसे केवल एक रेल यात्रा के दौरान स्पष्ट रूप से देखा और महसूस किया जा सकता है।

देश में कई लोगों के लिये स्वच्छता एक दिवास्वप्न है और इनकी स्वच्छता में उनकी सहायता करने के लिये, सरकार ने पिछले पाँच वर्षों में ग्यारह करोड़ से अधिक शौचालयों का निर्माण किया है और 2 अक्तूबर 2019 को ग्रामीण भारत को खुले में शौच से मुक्त घोषित किया है। हालाँकि उनमें से कई शौचालय कार्यरत अवस्था में नहीं हैं या उनमें जल की सुविधा नहीं है; किन्तु यहाँ इस बात पर विशेष बल दिया जाना चाहिये की इस प्रयास ने अभूतपूर्व जन जागरूकता का सृजन किया है। खुद गांधी जी का कहना था कि "मेरी धारणा है कि जहां स्वच्छता के निजी घरेलू और सार्वजनिक नियमों का कठोरता से पालन किया जाता है और आहार तथा व्यायाम के संबंध में उचित सावधानी बरती जाती है, वहां हारी-बीमारी का कोई भय नहीं होना चाहिए। जहाँ पूर्ण आंतरिक और बाह्य शुचिता है, वहां बीमारी पास नहीं फुटक सकती। अगर गांव के लोग इस बात को समझ जाएं तो उन्हें डाक्टरों हकीमों या वैद्यों की जरूरत नहीं पड़ेगी (हरि 26-5-1946. पृ. 153)|"[7]

स्वच्छ भारत मिशन ने पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों, नवजात और जन्म के समय कम वज़न वाले बच्चो में डायरिया और मलेरिया को कम करने में सहायता की है । वर्तमान में भारत में लगभग 38% के आसपास बच्चे कुपोषित हैं, जिसका एक बड़ा कारण डायरिया जैसे जलजनित रोग हैं। यद्यपि ऐसी समस्याओं से निपटने के लिये और हर घर को जल सुनिश्चित करने के लिये जल शक्ति मंत्रालय बनाया गया है । फिर भी अभी हम गाँधी के सपनों को पूरा करने में बहुत पीछें हैं |

उदाहरण के लिये गांधीजी द्वारा स्वीकृत 'सर्वधर्म समभाव' अर्थात् सभी धर्म समान है तथा 'सर्वधर्म सदभाव' अर्थात् सभी धर्मों के प्रति सद्भावना, इस वैश्विक एवं तकनीकी युग में सद्भाव और करुणा का वातावरण बनाए रखने और 'वसुधैव कुटुम्बकम' (विश्व एक परिवार है) के विचार को साकार करने के लिये आवश्यक है। गांधीजी के इस विचार को विश्व बैंक और कई प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों ने प्रतिध्वनित किया है, जहाँ उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया है कि पिरामिड के आधार तक पहुँचना महत्त्वपूर्ण है। किसी देश के समृद्धि का आकलन उसकी जनसंख्या के अंतिम श्रेणी के जीवन स्तर को माप कर किया जा सकता है। यह 'अंत्योदय'[8]की वही अवधारणा है, जिसे दीन दयाल उपाध्याय ने अपनाया था, जिसके केंद्र में समाज के सबसे कमज़ोर वर्ग की देखभाल करने का विचार है। सीढ़ी के निचले पायदान पर स्थित व्यक्ति को ऊपर उठाया जाता है, तभी देश का विकास हो सकता है।

गाँधी जी का मानना था कि "स्वास्थ्य ही सच्चा धन है सोने चांदी के टुकडे नहीं |"[9]तथा "स्वच्छ भारत स्वतः हमें स्वस्थ भारत की ओर प्रशस्त करेगा। गांधीजी का मानना था कि रोकथाम इलाज से बेहतर है |"[10]

भारत सरकार की आयुष्मान भारत योजना गांधीजी के इस विचार के अनुरूप है जिसमें लगभग पचास करोड़ लोगों को यह आश्वासन दिया गया है कि उनके अस्पताल में भर्ती होने पर इसका खर्च सरकार द्वारा वहन किया जाएगा। इस योजना का एक बड़ा लाभ यह होगा कि इससे टियर- II और टियर- III शहरों में छोटे नर्सिंग होम और अस्पतालों के निर्माण एवं उनकी संख्या में वृद्धि की संभावना बढ़ जाएगी क्योंकि उन क्षेत्रों में लोग अब तक ऐसी स्वास्थ्य सेवाओं को वहन कर सकने में सक्षम नहीं थे । इससे महानगरीय शहरों के अस्पतालों पर बोझ को कम करने में भी सहायता मिलेगी ।

भारत सरकार का पोषण अभियान एक बहु-मंत्रालयी अभिसरण मिशन है, जो यह सुनिश्चित करेगा कि भारत वर्ष 2022 तक कुपोषण मुक्त हो जाए। हाल ही में जारी यूनिसेफ की एक रिपोर्ट के अनुसार, पिछले 5-6 वर्षों में भारत में कुपोषण 38% से कम होकर 34% हो गया है। लेकिन यह एक चुनौती है कि प्रत्येक तीन में से एक बच्चा अभी भी कुपोषित है। यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय महिलाओं में एनीमिया कम होकर 46% हो गया है लेकिन यह अभी भी एक भयावह आँकड़ा है। वस्तुत: देश के 200 से भी अधिक ज़िलों में, लगभग 65% महिलाएँ अभी भी एनीमिया से पीड़ित हैं। पोषण अभियान के तहत, कुपोषण को प्रतिवर्ष 2% कम करने के प्रयास किये जा रहे हैं।

The Academia
(A Multidisciplinary Peer-Reviewed Research Journal)
Volume: 02, Issue: II, Pages: 16-20, Year: 2024
ISSN- 2583-8830

नीति आयोग द्वारा एकीकृत औषधीय पाठ्यक्रम की आवश्यकता पर ज़ोर दिया जा रहा है। हमें आयुर्वेद को निम्नस्तरीय स्वास्थ्य पद्धति समझना बंद कर देना चाहिये क्योंकि गांधीजी ने अपने जीवनकाल में इन औषधीय पद्धतियों का समर्थन किया था। भारत सरकार द्वारा आयुर्वेद में व्यापक शोध को बढ़ावा दिया जा रहा है और दुनिया की सबसे प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में अपने शोधपत्र प्रकाशित करने के प्रयास किये रहे हैं। हमारा प्रयास आयुर्वेद की क्षमता और महत्त्व को पहचान दिलाना है, जैसा कि चीनियों ने अपनी पारंपरिक चिकित्सा के लिये किया है, जिसे अब अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफडीए) ने उनके देश में उपयोग के लिये मंज़ूरी दे दी है।

गांधीजी हमेशा चाहते थे कि भारत एक समृद्ध और सक्षम देश बने और इसे प्राप्त करने के लिये पूर्व और वर्तमान में सरकार द्वारा कई कदम उठाए गए हैं। प्रधानमंत्री जन-धन योजना नामक वित्तीय-समावेशन कार्यक्रम के तहत 37 करोड़ से भी अधिक बैंक खाते खोले गए हैं। इन खातों में एक लाख करोड़ रुपए से भी अधिक रुपए जमा किये गए हैं। स्किल इंडिया योजना के तहत एक सार्वजनिक-निजी भागीदारी में नेशनल स्किल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन इंडिया की स्थापना की गई है जिसे भारत में कौशल परिदृश्य को उत्प्रेरित करने का अधिदेश दिया गया है ।

गाँधी जी का मानना था कि "मैं व्यक्तिगत रूप से, लंबी-चौड़ी मशीनों की सहायता से उद्योगों के केंद्रीकरण और बड़े-बड़े ट्रस्ट बनाने के खिलाफ हूं यदि भारत खद्दर और उससे जुड़ी तमाम बातों को अंगीकार कर ले तो मुझे आशा है कि वह आधुनिक मशीनों में से सिर्फ उन्हीं को अपनाएगा जो जीवन को सुविधाजनक बनाने और श्रम को बचाने के लिए आवश्यक हैं। (यंग इण्डिया, 24-7-1924, पू. 246)" [11]

निजी क्षेत्र नवीनीकरण और उद्यमशीलता को बढ़ावा देने और अर्थव्यवस्था की प्रगति सुनिश्चित करने हेतु एक अभिन्न है। नये भारत के निर्माण हेतु प्रतिबद्ध भारत सरकार ने निजी निवेश को आकर्षित करने के लिये विभिन्न प्रारूप पेश किये हैं, विशेषकर सड़कों और राजमार्गों, हवाई अड्डों, औद्योगिक पार्कों और उच्च शिक्षा और कौशल क्षेत्र में ।

गांधीजी महिला सशक्तीकरण के सबसे बड़े पैरोकार थे। उन्होंने खुले तौर पर महिलाओं को शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह और पर्दा व्यवस्था को समाप्त करने का समर्थन किया। उन्होंने महिलाओं को उनके घरों से निकलकर मुख्यधारा में शामिल होने का अवसर उपलब्ध कराया।

कहा जाता है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:' जिसका अर्थ है कि जहाँ महिलाओं की पूजा की जाती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। शक्ति के बिना शिव भी जड़ हैं। लैंगिक संदर्भ में हमें अपनी आर्थिक नीतियों और देश को जितना संभव हो, गैर-भेदभावपूर्ण बनाना चाहिये। इस दिशा में सरकार ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना, प्रधान मंत्री उज्ज्वला योजना , निर्भया फंड इसी तरह के स्त्री को सशक्त करने वाले कार्यक्रम है ।महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये भारत सरकार द्वारा निर्भया फंड भी स्थापित किया गया है। लेकिन महिला सशक्तीकरण का सबसे महत्त्वपूर्ण उपकरण शिक्षा है। हमें अपनी लड़कियों को शिक्षित करना चाहिये और इसके लिये लड़कियों के माता-पिता को प्रोत्साहन राशि प्रदान कराई जानी चाहिये ताकि वे काम करने या शादी के लिये स्कूल न छोड़ें। नये भारत में अगर देश के शासन प्रणाली में पारदर्शिता न हो तो दिक्कते सामने आती हैं | गांधीजी ने पूर्ण सुशासन और पारदर्शिता वाले रामराज्य का स्वप्न देखा था | उन्होंने यंग इंडिया में लिखा, "रामराज्य से मेरा मतलब हिंदू राज नहीं है। मेरे रामराज्य का अर्थ है- ईश्वर का राज्य । मेरे लिये, राम और रहीम एक ही हैं; मैं सत्य और धार्मिकता के ईश्वर के अलावा किसी और ईश्वर को स्वीकार नहीं करता। चाहे मेरी कल्पना के राम कभी इस धरती पर रहे हो या न रहे हो, रामायण का प्राचीन आदर्श निस्संदेह सच्चे लोकतंत्र में से एक है, जिसमें एक बहुत बुरा नागरिक भी एक जटिल और महंगी प्रक्रिया के बिना त्वरित न्याय को लेकर आश्वस्त हो |"[12]सुशासन की दिशा में सभी मंत्रालयों द्वारा सभी नियमित जानकारी और डेटा का सक्रिय प्रकाशन ऑनलाइन उपलब्ध कराया जा रहा है।

लोकतंत्र में एक अच्छा प्रशासन होना बहुत जरुरी है गाँधी जी का मानना था कि "लोकतंत्र भेड़चाल नहीं है | लोकतंत्र में, राय राय जाहिर करने और कार्य करने की व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सावधानी के साथ रक्षा की जाती है | इसलिए मैं मानता हूँ कि अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यकों से भिन्न दिशा में कार्य करने का पूरा पूरा अधिकार है | (यंग, 2-3-1922, पृ. 129)"[13]

गांधीजी के इस सपने को साकार करने के लिये, ग्राम पंचायतों और ग्राम सभाओं को स्थानीय विकास प्रशासन का केंद्र बिंदु बनाया गया है।

ISSN- 2583-8830

"भारत की स्वतंत्रता का मतलब पूरे भारत की स्वतंत्रता होना चाहिये; स्वतंत्रता की शुरुआत नीचे से होनी चाहिये। तभी प्रत्येक गाँव एक गणतंत्र बनेगा; अतः इसके अनुसार प्रत्येक गाँव को आत्मनिर्भर और अपने मामलों का प्रबंधन करने में सक्षम होना चाहिये। समाज एक ऐसा पिरामिड होगा जिसका शीर्ष, आधार पर निर्भर होगा।"[14]

इसी तरह कृषि क्षेत्र के सम्बन्ध में अगर हम देखे तो पाएंगे कि महात्मा गांधी मानव और प्रकृति के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध मानते थे। वह आत्मनिर्भर कृषि में विश्वास करते थे। ज़ीरो बजट नेचुरल फार्मिंग (ZBNF) हमारी खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करने और एक स्वस्थ और समृद्ध भारत सुनिश्चित करने में सक्षम है। पारंपरिक भारतीय कृषि प्रणाली में रासायनिक आगतों का कम-से-कम प्रयोग किया जाता है। जहाँ एक ओर फ्राँस द्वारा अगले चार वर्षों में कीटनाशकों के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने की बात कही जा रही है, वही दूसरी तरफ, भारत में भटिंडा से बीकानेर तक चलने वाली एक 'कैंसर ट्रेन'[15]है जिसमें पंजाब में अत्यधिक कीटनाशक प्रयोग के कारण कैंसर से पीड़ित दर्जनों लोग यात्रा करते हैं।

2. संदर्भ ग्रन्थ

1. https://bharatdarshan.co.nz/magazine/literature/1229/gandhi-ji-ka-jantar-hindi.html से उद्धरित
2. https://jivani.org/Biography/2224/Home, से साभार | कार्लाइल एक महान नीति-निर्माता थें, कार्लाइल ने अर्थशास्त्र के लिए "निराशाजनक विज्ञान" शब्द को अपने निबंध "नीग्रो प्रश्न पर समसामयिक प्रवचन" में गढ़ा था हालाँकि आज इसका सन्दर्भ अलग समझा जाता है |
3. https://www.studyboosting.com/2021/09/consumer-equilibrium-assumptions-and-conditions-in-hindi%20.html से उद्धरित
4. https://hindi.downtoearth.org.in/environment/sustainable-development-and-environmental-protection-gandhian-approach
5. कमल किशोर गोयनका ,संपादक ,पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्ति दर्शन ,दीनदयाल शोध संस्थान झाँसी मार्ग नई दिल्ली 2016
6. पेज संख्या –270, महात्मा गाँधी के विचार, आर के प्रभु तथा यू आर राव, नेशनल बुक ट्रस्ट 1994
7. पेज संख्या – 392 वही
8. पेज संख्या 13, भूमिका से, सं. डॉ. महेश चंद शर्मा , दीनदयाल उपाध्याय के सम्पूर्ण वांग्मय खंड 5 , प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 2016
9. पेज संख्या –205, महात्मा गाँधी के विचार, आर के प्रभु तथा यू आर राव, नेशनल बुक ट्रस्ट 1994
10. पेज संख्या –198, वही
11. पेज संख्या –273, वही
12. पेज संख्या –326, वही
13. पेज संख्या –342, वही
14. पेज संख्या –402, वही
15. https://hindi.asianetnews.com/punjab/cancer-express-is-the-lifeline-of-patients-know-on-which-route-it-runs-and-what-are-the-facilities-kpg-rh2nrm/articleshow-ec9tc3

Corresponding Author:
डॉ. रामानुज यादव,
हिंदी विभाग,
सी.एम.पी.डिग्री कॉलेज इलाहाबाद,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
Email- anuj.ram04@gmail.com